डॉ. महेश प्रसाद सिन्हा
प्रधानाचार्य सह ऐसोसिएट प्रोफेसर
हिन्दी विभाग, सी.एम.जे.कॉलेज दोनवारीहाट खुटौना,मधुबनी– 847227
Email ID: principalcmjcollege@gmail.com Web:www.cmjcollege.com Mob.No 8544513344

हिन्दी प्रतिष्ठा पार्ट–II के छात्रों के लिए कोर्स मैटेरियल (दिनांक–09 मई, 2020)

प्रयोगवाद की वैचारिक विशिष्टताएं

प्रयोग करने की प्रवत्ति वैसे तो हर युग में होती है, किन्तु 'प्रयोगवाद' नाम उन कविताओं के लिए रूढ़ हो गया है, जो कुछ नये बोधों, संवेदनाओं तथा षिल्पगत विषिष्टताओं को लेकर प्रगतिषील कविताओं के साथ विकसित हुई। इसका पर्यवसान नयी कविता में हो गया। इस तरह 'तारसप्तक' (सन्1943) के प्रकाषन से प्रयोगवाद' का आरंभ माना गया और 'दूसरा सप्तक' के प्रकाषन (1951) के साथ नयी कविता में घुलमिल कर लुप्त हो गया। कुछ लोग प्रयोगवादी आंदोलन को 'नयी कविता' की पृष्ठभूमि के रूप में भी देखते हैं। 'प्रयोगवाद' के प्रवर्तक कवि अज्ञेय हैं। 'प्रयोगवाद' नाम नंददुलारे बाजपेयी का दिया हुआ है। वस्तुतः प्रयोगवाद प्रगतिवाद की प्रतिक्रिया में उभर कर सामने आया, जिसकी मुख्य विषेषताएं प्रयोगषीलता, बौद्धिकता का आग्रह, अनुभूति एवं यथार्थ का संष्लेषण, नई राहों का अन्वेषण, वाद से मुक्ति, साहस और जोखिम, व्यक्तिवाद, काम संवेदना, षिल्पगत प्रयोग और भाषा–षैलीगत प्रयोग आदि। षिल्प के प्रति विषेष आग्रह को देखकर ही आलोचकों ने रूपवादी (Formist) तथा इन कविताओं को रूपाकाराग्रही कविता कहा। इस काल के प्रमुख कवि अज्ञेय, गिरिजा कुमार माथुर, मुक्तिबोध, नेमिचन्द्र जैन, भारत भूषण अग्रवाल, रघुवीर सहाय, धर्मवीर भारती आदि हैं। इसके साथ ही प्रयोगवाद का एक बड़ा विलक्षण रूप नकेन के प्रपद्यवाद के रूप में सामने आया। नकेनवादी कवियों में नलिन विलोचन षर्मा, केषरी कुमार व नरेष मेहता की कविताएं प्रयोगवादी कविताएं मानी जाती हैं।

प्रयोगवाद का उदय प्रगतिवाद की प्रतिक्रिया स्वरूप हुआ था। प्रगतिवादी कविता में जिस तरह की गंभीरता, तन्मयता, विविधता, व्यक्ति स्वातंत्र्य, अभिव्यंजना, अनुभूति की गहराई, संवेदनषीलता और कला के उत्कर्ष की अपेक्षा की गयी, वह हासिल नहीं हो सकी। प्रायः मार्क्सवादी विचारधारा को तरजीह दी गयी, उसके सिद्धांतों का यषोगान और लाल झंडे को सलाम किया गया, उसे हृदय की अनुभूति का विषय नहीं बनाया गया, जिसके कारण प्रगतिवादी कविता केवल षोषित वर्ग के प्रति एक बौद्धिक सहानुभूति बनकर रह गयी। अज्ञेय ने इस तथ्य को न केवल नकारा बल्कि उसका खुलासा करते हुए प्रगतिवाद के अंत और उसकी कमियों–खामियों को अपनी कविता 'कलगी बाजरे की' में उतार दिया– *'अगर मैं तुमको ललाती साँझ के नभ की अकेली/तारिका/अब नहीं कहता,/या षरद के भोर की नीहार–न्हायी कुँई,/टटकी कली चम्पे की, वगैरह, तो/ नहीं कारण की मेरा हृदय उथला या सूना है/या कि मेरा प्यार मैला है।/बल्कि केवल यही; ये उपमान मैले हो गये हैं।/देवता इन प्रतीकों के कर गये हैं कूच।/कभी बासन अधिक घिसने से मुलम्मा छूट जाता है।'*

प्रगतिवाद के केन्द्र में समाज था और सामाजिकता का दबाव इतना बढ़ गया कि उसमें व्यक्ति और उसकी स्वतंत्रता, उसका व्यक्तित्व, उसकी पहचान और उसका आस्तित्व सब दब गया। इसलिए प्रयोगवाद में समाज की तुलना में व्यक्ति को, विचारधारा के स्तर पर अनुभव को और विषय वस्तु के धरातल पर कलात्मकता को प्रमुखता मिली। मतलब यह कि

प्रयोगवाद में भाव पहले स्तर पर 'व्यक्ति सत्य' को उद्‌घाटित किया गया और दूसरे स्तर पर 'सामाजिक सत्य' को। समाज की तुलना में व्यक्ति, उसकी स्वतंत्रता, उसका वजूद और आइडेन्टिटी केन्द्र में आ गया और इस केन्द्र के चारों ओर सामाजिक ललक या सामाजिक सत्य व्यक्ति के शृंगार के रूप में दिखने लगा। व्यक्ति के साथ समाज का आग्रह हर जगह निरन्तर उपस्थित है और इसी में व्यक्ति का महत्त्व स्थापित है। इसी तरह षिल्प और षैली में नयी प्रयोगषीलता का उत्कर्ष नयी कलात्मकता को जन्म दिया, जिसे देखकर आलोचकों ने प्रयोगवादियों को रूपवादी (Formist) तथा इनकी कविताओं को रूपाकाराग्रही कविता कहा। ऐसा नहीं है कि रूप का आग्रह पहले नहीं था। छायावाद में प्रसाद जी ने सौंदर्य चित्रण में जिस रूप की अभिव्यक्ति की है, वह जीवन से घनीभूत रूप में न जुड़कर महज चमत्कार का उत्कर्ष है–

नील परिधान बीच सुकुमार, खुल रहा मृदुल अधखुला अंग
खिला हो ज्यों बिजली का फूल, मेघ बन बीच गुलाबी रंग।

इसके ठीक विपरीत हम अज्ञेय की कविताओं में रूप–सौंदर्य का उत्कर्ष जीवन से घनीभूत रूप में जुड़ा हुआ पाते हैं। 'अरी ओ करूणा प्रभामय' संग्रह की 'सोन मछली' कविता का एक चित्र है, जिससे प्रायः उनके आलोचक खासकर नामवर सिंह बेहद प्रभावित थे–

हम निहारते रूप
काँच के पीछे
हाँप रही है, मछली।
रूप–तृषा भी
(और काँच के पीछे)
है जिजीविषा।

प्रयोगवादी कवियों ने जिस यथार्थ का चित्रण किया वह प्रगतिवाद के षोषित वर्ग और निम्न वर्ग या किसान–मजदूर वर्ग के अनजीया–अनभोगा जीवन से अलग स्वयं का जीया हुआ, भोगा हुआ था। यही कारण है कि उनकी कविताओं में विस्तार कम किन्तु गहराई अधिक है। अज्ञेय ने तो खुलकर कहा–

किन्तु हम हैं द्वीप
हम धारा नहीं हैं
स्थिर समर्पण है हमारा
द्वीप हैं हम।

इस प्रकार अपनी कुछ कमियों के साथ प्रयोगवाद प्रगतिवाद की अपर्याप्तता के विरुद्ध वादमुक्त काव्यधारा है। इसमें जीवन और जगत के परिवर्तित सौंदर्य की अभिव्यक्ति के साथ व्यक्ति के अनुभूत सत्य से समष्टि तक पहुंचने की व्यग्रता है। आधुनिक बौद्धिकता के साथ यूरोपीय दर्षन एजरा पाउण्ड, साइमन द बोउआ, इलियट, सार्त्र, हाइडेगर, फ्रायड, डार्विन आदि का प्रभाव देखा जा सकता है। षैलीगत और विषयगत प्रयोग में नवीनता और विविधता है। नये सत्यों या नयी यथार्थताओं, नये रागात्मक संबंधों तथा व्यापक समर्पण का जीवंत बोध मिलता है। अहं का विस्फोट और स्वांतःसुखाय छायावाद की तरह यहां भी मौजूद है। अज्ञेय की कविता 'कलगी बाजरे की' पूरी समग्रता, सजगता में अपने पूरे वजूद– व्यक्तित्व, अस्तित्व, व्यक्ति स्वातंत्र्य व आइडेन्टिटी को दर्षाती है। इसी तरह 'कितनी नावों में कितनी बार' कविता अनंत सत्य की निरंतर खोज में विकास की अनंत प्रक्रिया को दर्षाती है।

दिनांक : 09/05/2020 **– डॉ. महेश प्रसाद सिन्हा**